صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ﴿٥﴾ الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ﴿٦﴾ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ﴿٧﴾ ع

भूले बैठे हैं[5] वोह जो दिखावा करते हैं[6] और बरत्ने की चीज़[7] मांगे नहीं देते[8]

ایاتها ٣ ﴿١٠٨ سُوْرَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ ١٥﴾ ركوعها ١

सूरए कौसर मक्किय्या है, इस में तीन आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ﴿١﴾ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ﴿٢﴾ اِنَّ شَانِئَكَ

ऐ मह़बूब बेशक हम ने तुम्हें बे शुमार ख़ूबियां अ़ता फ़रमाईं[2] तो तुम अपने रब के लिये नमाज़ पढ़ो[3] और क़ुरबानी करो[4] बेशक जो तुम्हारा दुश्मन है

هُوَ الْاَبْتَرُ ﴿٣﴾ ع

वोही हर ख़ैर से मह़रूम है[5]

ایاتها ٦ ﴿١٠٩ سُوْرَةُ الْكٰفِرُوْنَ مَكِّيَّةٌ ١٨﴾ ركوعها ١

सूरए काफ़िरून मक्किय्या है, इस में छ[6] आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

5 : मुराद इस से मुनाफ़िक़ीन हैं जो तन्हाई में नमाज़ नहीं पढ़ते क्यूं कि इस के मो'तक़िद नहीं और लोगों के सामने नमाज़ी बनते हैं और अपने आप को नमाज़ी ज़ाहिर करते हैं और दिखाने के लिये उठ बैठ लेते हैं और ह़क़ीक़त में नमाज़ से ग़ाफ़िल हैं। **6 :** इबादतों में। आगे उन के बुख़्ल का बयान फ़रमाया जाता है **7 :** मिस्ल सूई व हांडी व पियाले के **8 मस्अला :** उ़लमा ने फ़रमाया कि मुस्तह़ब है कि आदमी अपने घर में ऐसी चीज़ें अपनी ह़ाजत से ज़ियादा रखे जिन की हमसायों को ह़ाजत होती है और उन्हें आ़रिय्यतन दिया करे। **1 :** "सूरतुल कौसर" जुम्हूर के नज़्दीक मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, तीन आयतें, दस कलिमे, बियालीस ह़र्फ़ हैं। **2 :** और फ़ज़ाइले कसीरा इनायत कर के तमाम ख़ल्क़ पर अफ़्ज़ल किया। ह़ुस्ने ज़ाहिर भी दिया ह़ुस्ने बात़िन भी, नसबे आ़ली भी, नुबुव्वत भी, किताब भी, ह़िक्मत भी, इ़ल्म भी, शफ़ाअ़त भी, ह़ौज़े कौसर भी, मक़ामे मह़मूद भी, कस्रते उम्मत भी, आ'दाए दीन पर ग़लबा भी, कस्रते फ़ुतूह़ भी और बे शुमार ने'मतें और फ़ज़ीलतें जिन की निहायत नहीं। **3 :** जिस ने तुम्हें इ़ज़्ज़तो शराफ़त दी **4 :** उस के लिये उस के नाम पर, ब ख़िलाफ़ बुत परस्तों के जो बुतों के नाम पर ज़ब्ह़ करते हैं। इस आयत की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है कि नमाज़ से नमाज़े ई़द मुराद है। **5 :** न आप। क्यूं कि आप का सिल्सिला क़ियामत तक जारी रहेगा, आप की औलाद में भी कसरत होगी और आप के मुत्तबिई़न से दुन्या भर जाएगी, आप का ज़िक्र मिम्बरों पर बुलन्द होगा, क़ियामत तक पैदा होने वाले आ़लिम और वाइज़ **अल्लाह** तआ़ला के ज़िक्र के साथ आप का ज़िक्र करते रहेंगे, बे नामो निशान और हर भलाई से मह़रूम तो आप के दुश्मन हैं। **शाने नुज़ूल :** जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के फ़रज़न्द ह़ज़रते क़ासिम का विसाल हुवा तो कुफ़्फ़ार ने आप को "अब्तर" या'नी मुन्क़त़उ़न्नस्ल कहा और येह कहा कि अब इन की नस्ल नहीं रही, इन के बा'द अब इन का ज़िक्र भी न रहेगा, येह सब चरचा ख़त्म हो जाएगा, इस पर सूरए करीमा नाज़िल हुई और **अल्लाह** तआ़ला ने उन कुफ़्फ़ार की तक्ज़ीब की और उन का बालिग़ रद फ़रमाया। **1 :** "सूरतुल काफ़िरून" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, छ[6] आयतें, छब्बीस कलिमे, चोरानवे ह़र्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** क़ुरैश की एक जमाअ़त ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा कि आप हमारे दीन का इत्तिबाअ़ कीजिये हम आप के दीन की इत्तिबाअ़ करेंगे, एक साल आप हमारे मा'बूदों की इबादत करें एक साल हम आप के मा'बूद की इबादत करेंगे, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया :